RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

सत्योत्तर राजनीति एवं संचार माध्यम

डॉ. मनोज कुमार पटेल
[संशोधक]

१. भूमिका

सत्योत्तर राजनीति राजनीतिक संस्कृति का एक अंग है, जिसे वास्तविक तथ्यात्मक राजनीति या उत्तर वास्तविकता राजनीति भी कहा जाता है | इस राजनीति में चर्चाओं को नीति - policy - से परे भावनाओं के जरिए बडे स्तर पर सृजित किया जाता है| उन्हें बार-बार पेश किया जाता है| तथ्यों की अनदेखी की जाती है | सत्योत्तर परंपरागत प्रतिस्पर्धा से भिन्न है |यहां भावनाओं को प्रमुखता दी जाती है| भावनाओं को मुख्य रूप से पेश किया जाता है | सापेक्ष तथ्यों एवं विशेषज्ञों के विचारों को द्वितीयकरूप में प्रस्तुत किया जाते है| इस प्रकार तथ्यों को झूठे साबित किए जाते हैं | यह प्रवृत्ति को कुछ विद्वान समकालीन समस्या मानते हैं तो कुछ परंपरागत | संचार माध्यम एवं संबंधित सामाजिक परिवर्तनों के आगमन से पहले यह कम उल्लेखनीय थी|

अध्येताओने इसकी पहचान 2018 तक अमेरिका ब्रिटेन एवं रूस के बीच राजनीतिक टकराव में की थी | तत्पश्चात इसे24 घंटे का समाचार चक्र, समाचारों में झूठ को पेश करना, सामाजिक माध्यमों की बढ़ती पहुंच के साथ संयोजित करके पेश किए जाने पर विश्लेषित किया जा रहा है | सत्योत्तर - POST TRUTH - शब्द तब चर्चा में आया जब इसे 2016 में 'ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी'में'वर्ड ऑफ द ईयर ' घोषित किया | उस साल ब्रेक्सिट, अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के लिए जनमत संग्रह एवं जनसंचार माध्यम कवरेज के संदर्भ में इसको चुना गया था|

2. सत्योत्तर का उद्भव विकास एवं वर्तमान

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के मुताबिक 'सत्योत्तर'शब्द का उल्लेख पहली बार 1992में अपने 'द नेशन ' में सर्बियाईअमेरिकी नाट्यकार स्टीव टेसिच ने किया था|टेसिच के मुताबिक'वाटरगेट' घोटाले का सामने आना , ईरान -कॉन्ट्रा घोटाला एवं खाड़ी युद्ध की कवरेज में अधिक पाया जाता हैकि 'हमने एक स्वतंत्र जनता। के रूप में , स्वतंत्र रूप से फैसला किया है कि, हम कुछ सच्चाई की दुनिया में रहना चाहते हैं |' राल्फ किस ने 2004 में अपनी किताब 'पोस्ट ट्रुथ एरा' में इस शब्द का उपयोग किया है | उसी साल अमेरिकी पत्रकार एरिफ अल्टरमैंनने 'Post Truth Political Environment' के बारे में प्रकाश डाला ओर 9/11 के पश्चात बुश प्रशासन द्वारा किए गए भ्रामकवक्तव्यों के उनके विश्लेषण में 'The Truth Presidency' शब्द का उपयोग किया था | कोलिन कोच ने 2004 में अपनी किताब 'Post Democracy' में राजनीति के मॉडल का अर्थ 'Post Democracy' किया ,जहां 'चुनाव निश्चित रूप से मौजूद है और सरकारें बदल सकते हैं', लेकिन सार्वजनिक चुनावी बहस एक कड़े नियंत्रित प्रदर्शन है , प्रबंधित प्रेरणा की तकनीकों में पेशे वर विशेषज्ञों की प्रतिद्वंदी टीमों द्वारा।उन टीमोंद्वारा चुनी गई समस्याओं की एक छोटी श्रृंखला पर विचार करते हुए ' क्रॉच सीधे राजनीतिक संचार के 'विज्ञापनउधोग मॉडल'को विश्वास और बेईमानी के आरोपों के आरोप में विशेषता देता है कि कुछ साल पहलेसे सच्चाईकी राजनीति से जुड़ा हुआ है |

'Post Truth Politics' शब्द का उपयोग 1 अप्रैल 2010 को ब्लॉगर डेविड रॉबर्टसने ग्रीस्ट के लिए लिखे एक ब्लॉग में किया था | जहां उन्होंने इसे 'A Political Culture' के रूप में परिभाषित किया जाता था जिसमें राजनीति ज्यादातर पूरी तरह से नीति - policy - से पर हो गई है | संयुक्त राज्य अमेरिका में '2016 के राष्ट्रपति चुनाव ' अभियान एवं 2016 में यूरोपीय संघ में सदस्यता पर जनमत संग्रह के दौरान यह शब्द सर्वव्यापी हो गया | ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने घोषणा की कि 2016 का अन्तर्राष्ट्रीयशब्द 'Post Truth' है, जो 2015 की तुलना में उपयोग में 2000 प्रतिशत की वृद्धिका हवाला देते हुए हैं|

हावर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जेनिफर होचस्चिल्ड ने 20 वीं सदी में एकअवधि के पश्चात 18 वी एवं 19वीं सदी में संयुक्त राज्य अमेरिका में राजनीतिक एवं माध्यम प्रथाओं की वापसी के रूप में सच्चाई के उदय के बारे में बताया है जहां माध्यम अपेक्षाकृत संतुलित एवं अलंकृत था |

1600 में छिपाई तकनीकी का आरंभ हुआ , जिससे साक्षरता का व्याप बढ़ा, पुस्तिका पत्रों का आरंभ हुआ | उन्हें बाद में सच्चाई की राजनीति के आरंभिक रूप में रेखांकित किया गया है | बदनामी करनेवालीपुस्तिकाएं सस्ते में मुद्रित होने लगी | उनका व्यापक प्रसारकिया गया जिससे असंतोष फैला। उससे अंग्रेजी गृहयुद्ध एवं स्वतंत्रता के अमेरिकी युद्ध जैसे युद्ध और क्रांति हुई|

RRIJM 2015, All Rights Reserved

3. सत्योत्तर राजनीति की प्रकृति

सत्योत्तर राजनीति की प्रमुख विशेषता यह है कि , प्रचारक अपने प्रचारकी सामग्री को दोहराता रहता है , जबकि उसे माध्यमों या विशेषज्ञों द्वारा असत्य साबित की हुई होती है फिर भी। उदाहरण के रूप में देखे तो 'ब्रिटेन ईयू जनमत' अभियान के लिए प्रचार के दौरान वोट छोड़ने के पक्ष में मानने वालों ने इस बात का बार-बार उपयोग किया था कि यूरोपीय संघ की सदस्यता में 1 हफ्ते में 350 मिलीयन पाउंड की लागत आती है, जबकि बाद में यूरोपीय संघ ने इस आंकड़े को प्रत्यक्ष रूप से भेजे गए पैसों की शुद्ध राशि के रूप में उपयोग करना शुरू किया था। लीव यूके एवं अन्य कारको को नजरअंदाज करने वाले इस आंकड़े को यूके सांख्यिकी प्राधिकरण द्वारा संभावित रूप से भ्रामक व्याख्यायितकिया था, जिसकोवित्तीय अध्ययन संस्थान द्वारा सही नहीं बताया था एवं बीबीसी समाचार तथा चैनल 4 समाचार द्वारा इसके तथ्यों की पूर्ण जांच में यह पाया गया था | उन्होंने अपने अभियान के केंद्र में इस आंकड़े का उपयोग जारी रखा था | बाद में उन्होंने इसका उदाहरण के रूप में उपयोग करना कम कर दिया था और बताया की , यह यूरोपीय संघ को भेजीगईशुद्धनिधि के संभावित वैकल्पिक उपयोग के रूप में थी। टोरी सांसद एवं लिव यूकेके प्रचारक सारा वोलास्टन ने अपने अभियान के दौरान इसके विरोध में समूह को छोड़ दिया था और सत्योत्तर राजनीति की आलोचना की थी। 'द डेली टेलीग्राफ' के लिए संसदीय स्केचराइटर माइकल देकाॅन ने सत्योत्तर राजनीति कोसारांशित करते हुए बताया था कि इसमेंतथ्य नकारात्मक ,निराशावादी,असभ्य एवं पक्षपाती होते हैं। इस संदर्भमे यूरोपीयन सकारात्मक अभियान केप्रसारकोधक्का पहुंचा सकते हैं , जिसके लिए विरोधियों को पक्षपात के रूप में डरावना एवं विपक्ष के रूप में खारिज किया जा सकता है|

अपनी पराकाष्ठा में सत्योत्तर राजनीति षडयंत्रवाद का उपयोग कर सकती है। सत्योत्तर राजनीति के इस रूप में झूठी अफवाहे प्रमुख समाचार विषय बन जाती है । पिज़्ज़ागेट षडयंत्र के मामले में ,इसकेफलस्वरूप एक व्यक्ति धूमकेतु पिंग पोंग पिज़्ज़ेरिया में प्रवेश कर रहा था और एक एआर -15 राइफल फायर कर रहा था। सत्योत्तर राजनीति को ध्यान में रखते हुए एस्कि वयर के जैक होम्स जैसे लेखकों के अनुसार यदि आप सत्य क्या है नहीं जानते हैं तो आप जो चाहे वह कह सकते हैं और वह झूठ नहीं है |

4. सत्योत्तर राजनीति के संचालक

साल 2015 में जन संचा र माध्यम एवं राजनीति विशेषज्ञ जेसन हर्सिन ने ' Regime Of Post Truth' , शब्द का इस्तेमाल किया था , जिसमें सत्योत्तर राजनीति के कई पहलुओं को सम्मिलित किया गया था। उनका कहना है कि , विकास के अभिसरण समूहने सत्योत्तर समाज की स्थितियों का निर्माण किया है | राजनीतिक संचार संज्ञानात्मकविज्ञान द्वारा सूचित किया जाता है। जिसका उद्देश्य माइक्रो ट्राइक्लिंग जैसी तकनीकों के जरिए आबादी की मान्यताएं एवं धारणाओं को नियंत्रित करना है, जिसमें अफवाहे और झूठ काराजनीतिक उपयोग शामिल है। आधुनिक , ज्यादातर केंद्रीयकृत जन समाचार माध्यम गेटकीपरो का बिखराव, जिसने बड़े पैमाने पर एक दूसरे के स्कुप्स और उनकी रिपोर्ट्स दोहराई है। सूचना अधिभार ओर त्वरण, उपयोगकर्ता द्वारा सृजित सामग्री एवं कम समाज व्यापी आम भरोसेमंद कर्मियो द्वारा सत्यओर असत्य, सटीकओर गलत के बीच अंतर करने के लिए ध्यान केंद्रित अर्थव्यवस्था , एल्गोरिदम जो सामाजिक माध्यम एवं खोज इंजन (सर्च इंजन) मैं दिखाई देता है , जो उपयोगकर्ता पर आधारित है तथा तथ्यात्मक या वस्तुपरक नहीं है ; साथ ही साथ समाचार माध्यम जो साहित्यिकचोरी, धोखाधड़ी, प्रचार एवं समाचार मूल्यों को बदलने के घोटालो सेमारा गया है। यह घटनाएं आर्थिक मुश्किलों की पृष्ठभूमि, घटती हुई और अधिक पारंपरिक टैबलेट कहानियों और रिपोर्टिंग की शैलियो की और रुख करने के पक्ष में हुई है , जिन्हें 'टैब्लाइडनाइजेशन' और 'इंफोटेमेंट' के नाम से जाना जाता है।

फिर भी इनमें से कुछ घटनाएं अतीत में वापस जाने का सुझाव दे सकती है ।अभीसरण का प्रभाव एक सामाजिक , राजनीतिक घटना है जो जानबूझकर विरूपण एवं संघर्ष में पत्रकारिता के पहले रूपों से अधिक है। तथ्यों की जांच करने वाली और अफवाह - बस्टिंग साइट स बहुत हैं , लेकिन वह उपभोक्ताओं के एक खंडित हिस्सेतकपहुंचरखतीएवंभरोसेमंदहै। अविश्वास को एकजुट करने में असमर्थ है। हरसिन ने इसे मात्र सत्योत्तर राजनीति की बजाय सत्योत्तर शासन कहा है।पेशेवर पैन पार्टि सन, राजनीतिक संचार का प्रतिस्पर्धात्मक रूप से उपयोग करता है।

प्रमुख समाचार संस्थान

जन संचार माध्यमों में ऐसी कई प्रवृत्ति सामने आती है, जोकि सत्योत्तर राजनीति के उदय के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराती है। राज्य द्वारा पुरस्कृत समाचार संस्थाए जैसा कि, चीन का CCTV NEWS, रशिया का RT, संयुक्त राज्य अमेरिका का Voice Of America कावैश्विक स्तर पर बहुत बड़ा फैलाव है , जो कि विशेष रूप से पश्चिमीएवंपुर्वियदर्शकोको प्रभावित करने का काम करते हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रसिया के मास्को में TNT चैनल के लिए काम करने वाले ब्रिटिश रूसी पत्रकार पीटर पोमेरेंटव कहते हैं कि , उन सभी माध्यम संस्थानों के प्रमुख उद्देश्योंमें से एक सरकार , लोकतंत्र और मानव अधिकारों की संरचनाओ समेत पश्चिमी संस्थानों को वैधता प्रदान करवानी है। 2016 तक अमेरिका में मुख्यधारा के माध्यमों में विश्वास ऐतिहासिक स्तर तक पहुंच गया था। यह सुझाव दिया गया था कि इन शर्तों के अंतर्गत समाचार पत्रों द्वारा तथ्यों की जांच बहू जनता के बीच आकर्षण प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती रहती है और राजनेता तेजी से कठोर संदेश का सहारा लेते हैं।

कई समाचार संस्थान निष्पक्ष होने की नीति रखते हैं। इस पर कई विशेषज्ञों ने विचार करते हुए बताया है कि कुछ मामलों में यह झूठे संतुलन की ओर जाता है , जिसमें असमर्थित या अस्वीकृत दावों पर उनके वास्तविक आधार को चुनौती देने की बजाय समानजोर दिया जाता है। 24 घंटे चलने वाले समाचार चक्र का यह भी अर्थ है कि , समाचार चैनलबार-बार समान सार्वजनिक आंकड़ों के प्रति आकर्षित रहते हैं , जो पीआर - समझदार राजनेताओं को लाभ करवातेहै। इसका मतलब यह निकलता है कि प्रस्तुतीकरण एवं व्यक्तित्व के तथ्यों की तुलना में दर्शकों पर बड़ा प्रभाव हो सकता है, जबकि दावे की प्रक्रिया और प्रतिदावा मामले में गहन विश्लेषण के खर्च पर समाचार कवरेज के दिनों के लिए ग्रिस्ट प्रदान करता है।

सामाजिक माध्यम

सामाजिक माध्यम सत्योत्तर राजनीति में एक अतिरिक्त आयाम जोड़ते हैं। यहां उपयोगकर्ता नेटवर्क गूंज कक्ष-इको चेम्बर - बन सकते हैं। यहां संभवतः: फिल्टर बबल द्वारा जोर दिया जाता है, जहां एक राजनीतिक दृष्टिकोण पर अधिकार होता है और दावे की जांच विफल हो जाती है।वेबसाइटस, प्रकाशक एवं समांतर माध्यम पारिस्थितिकी तंत्र की अनुमति देता है समाचार चैनल विकसित करने के लिए , जो बिना किसी विवाद के बाद सत्य असत्य दावो को दोहरा सकता है। ऐसी स्थिति में, सत्योत्तर के बादके अभियान तथ्य जांच को अनदेखा कर सकते हैं या उन्हें पूर्वाग्रह से प्रेरित होने के रूप में खारिज कर सकते हैं। 'गार्जियन' अखबार के प्रमुख संपादक कैथरिन विनरने'क्लिकबेट' के उद्भव पर एक दोष डाला कि एक भ्रामक शिर्षक के साथ संदिग्ध तथ्यात्मक सामग्री के लेख और जिन्हें व्यापक रूप से साजा करने के लिए तैयार किया गया है। उन्होंने कहा था कि 'सस्ते क्लिक का पीछा करना शुद्धताऔर सत्यता की कीमत पत्रकारिता और सत्य के मूल्य को कमजोर करती है ।'2016 में तथ्य जांचने और डिबकिंग साइट स्नोपस डॉट कॉम ने सामाजिक माध्यम और नकली समाचार साइट्स को एक मोड़ के रूप में पेश किया।जहासेजूठपानीकीतरहबहतारहताहै।

डिजीटल संस्कृति प्रत्येक व्यक्ति को कंप्यूटर और इंटरनेट तक पहुंचने की अनुमति देती है , जिससे वह अपने विचार ऑनलाइन भेज सके एवं उन्हें इस तथ्य के रूप में चिन्हित कर सके , जो गूंज कक्षो - ईकोचेंबर - और दूसरे उपभोक्ताओं को मान्य करने वाले अन्य उपभोक्ताओं के माध्यम से वैध हो सकता है। सामग्री का मूल्यांकन इस बात पर आधारित किया जा सकता है कि भेजी गई सामग्री को कितना स्वीकार मिलता है। यहां स्वीकारतथ्यों की बजाय भावनाओं पर होता है। सामग्री जो अधिक स्वीकार की जाती है, उसकी वैधता के बावजूद भी विभिन्न इंटरनेट सर्किलो के इर्द-गिर्द लगातार छाना जाता है। कुछ लोग यह भी तर्क देते हैं कि इंटरनेट पर किसी भी समय उपलब्ध तथ्य की बहुतायत एक अंतर्निहित सत्य की बजाय जानकारी के बुनियादी दावो को जानने या सावधानी पूर्वक विचार विमर्श करने वाले विचारों को तैयार करने पर केंद्रित है। इंटरनेट लोगों को यह पसंद करने का अधिकार देता है कि उन्हें अपनी जानकारी कहां मिलती है, जिससे वह अपनी राय को मजबूत कर सकते हैं।

धुवीकृत राजनीतिक संस्कृति

सत्योत्तर राजनीति का आविर्भाव ध्रुवीकरण राजनीतिक मान्यताओं के साथ ज्यादा मेल खातादिखाई पड़ता है। अमेरिका में वयस्कों परकिएगए प्यू रिसर्च सेंटर के शोध अध्ययन में पाया गया कि 'बाएं और दाएं सबसे अधिक विचारधारात्मक विचारों वाले लोगों में सूचना धाराएं हैं जो अधिक मिश्रित राजनीतिक विचारों वाले व्यक्तियों से अलग है - और एक - दूसरे से ज्यादा अलग है। तथ्य तेजी से सुलभ हो रहे हैं; क्योंकि नई प्रौद्योगिकियों को नागरिकों के रोजमर्रा के जीवन में पेश किया जाता है। तथ्य और आंकड़ों के लिए एक जुनून, राजनीतिक दृश्य में भी छानता है; और राजनीतिक बहुत एवं भाषण जानकारी के स्निपेट से भरे हो जाते हैं जो गलत चित्रित , गलत या पूरी तस्वीर नहीं हो सकती है। सनसनीखेज टेलीविजन समाचार भव्य वक्तव्य पर जोर देता है और आगे राजनेताओं को प्रचारित करता है। माध्यमों कीयह प्रवृत्ति इस बात पर प्रभाव डालती है कि , जनता राजनीतिक मुद्दों और उम्मीदवारों को कैसे देखती है |

5. निराशावादी विचार एवं सत्योत्तर राजनीति।

एक संपादकीय में ' न्यू साइंटिस्ट ' ने सुझाव दिया था कि 'एक सनकी आश्चर्यचकित हो सकता है कि क्या राजनेता

RRIJM 2015, All Rights Reserved

वास्तव में उनके द्वारा उपयोग कियाजानेवालासबकुछबेईमानी है'और अनुमान लगाया था कि 'एक बार चुनिंदा कानों में फुसफुसाए जाने वाले तंतु को अब हर किसी के द्वारा सुझाया जाता है'। इस तरह विनर ने सुझाव दिया था कि सामाजिक माध्यमों ने कुछ हद तक और असत्य फैलाने में मदद की है , लेकिन उसने दूसरों को भी रोक दिया है ; जैसा कि , उन्होंने कहा था कि हिल्सबोरो आपदा के बाद सूर्य की झूठी सत्य कहानी, एवं उससे संबंधित पुलिस कवरअप का सामाजिक माध्यमों के युग में कल्पना करना मुश्किल होगा। पत्रकार जॉर्ज गिललेट ने सुझाव दिया था किसत्योत्तर शब्द गलती से अनुभवजन्य और नैतिक निर्णयो को स्वीकार करता है , यह मानते हुए की सत्योत्तर आंदोलन वास्तव में मूल्य आधारित राजनीतिक निर्णय के लिए विशेषज्ञों की आर्थिक राय के खिलाफ एक छद्मविद्रोह है।

द स्पेक्ट्रेटर के लिए लिखने वाले टोपियंग ने कहा था कि, जिसे ' क्लिच ' शब्द कहा जाता है , यह मुख्य रूप से बाएं बाजू के लोगों द्वारा चुनिंदा रूप से सार्वभौमिक वैचारिक पूर्वाग्रहो पर हमला करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है , जिस का तर्क है कि, हम सभी सत्योत्तर वादी है और शायद हमेशा रहेंगे। 'द इकोनोमिस्ट'सामयिक ने इस तर्क को "आत्मनिर्भर" कहा था , हालांकि, पिछली पीढ़ी के राजनीतिक घोटालों के बीच गुणात्मक अंतर की पहचान करना, जैसे सुएज संकटऔर समकालीन लोग, ₩जिस में सार्वजनिक तथ्यों को नजरअंदाज कर दिया जाता है। इसी तरह एलेक्सियो मंटजारलिस ने कहा था कि, राजनीतिक झूठ नए नहीं थे और इतिहास में कई राजनीतिक अभियानों की पहचान की गई थी जिन्हें अब ' सत्योत्तर ' के रूप में वर्णित किया जाएगा। मंटजारलिस के लिए 'सत्योत्तर' लेबल कुछ हद तक था - 'किसी भी तथ्यों पर हमलों पर प्रतिक्रिया करने वाले टिप्पणी कारों के लिए प्रतिवाद तंत्र , लेकिन उन लोगों पर उनके विश्वास प्रणाली के लिए,' लेकिन यह भी ध्यान दिया गया कि 2016 'एक अटलांटिक के दोनों किनारों पर राजनीति के लिए कट्टरपंथी वर्ष'था| मंटजारलिस ने यह भी ध्यान दिया था कि , वास्तव में जांच में दिलचस्पी कभी अधिक नहीं थी, यह बताते हुए कि मतदाताओं का कम से कम हिस्सा सत्योत्तर राजनीति को खारिज कर देता है।

6. विश्व में सत्योत्तर राजनीति का उपयोग

राजनीतिक संस्कृति की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए राजनीतिक चर्चा के रूप में सत्योत्तर राजनीति लागू की गई है। ब्रिटिश पत्रिका the Economist ने अपने एक लेख में ऑस्ट्रिया, जर्मनी, उत्तर कोरिया, पोलैंड ,रूस ,तुर्की, यूनाइटेड किंग्डम, और संयुक्त राज्य अमेरिका में सत्योत्तर राजनीति की पहचान की थी जो निम्नवत है :

जर्मनी

दिसंबर 2016 में 'पोस्टफैक्टिश' (बाद के तथ्यात्मक) को वर्ष के शब्द का नाम 'गेसेलस्काफ्ट फर ड्यूशशे स्प्रेचे (जर्मन भाषा समाज) द्वारा दिया गया था, जो 2015 से दाएं बाजूओं की लोकप्रियता के उदय के सिलसिले में भी था। 1990 के दशक से,'Post Democracy'समाजशास्त्र में अधिक से अधिक इस्तेमाल किया गया था|

भारत

'द टाइम्स ऑफ इंडिया ' के स्तंभकार अमूल्य गोपाल कृष्णनने एक तरफट्रंप और ब्रेक्सिट अभियानों के बीच समानताएं और भारत में महत्वपूर्ण मुद्दे जैसे इशरत जहां मामला और दूसरे पर तीस्ता सेतलवाद के खिलाफ चल रहे मामले की पहचान की , जहां आरोप जाली सबूत और ऐतिहासिक संशोधनवाद के परिणाम स्वरुप 'वैचारिक प्रभाव' पड़ा था।

यूनाइटेड किंगडम

यूनाइटेड किंगडम में स्कॉटिश पार्टी केदावो एवं अधिकृत आकड़ो के बीच जो अंतर था उसकी आलोचना करते हुए मार्च 2012 में स्कॉटिश एमएसपी इयान ग्रे द्वारा 'सत्योत्तर राजनीति' शब्द का प्रयोग किया गया था। स्कॉटिश श्रमिक नेता जिम मर्फीने सत्योत्तर राजनीति की समीक्षा करते हुए 'Cheerfully Shot The Messenger' कहा था , जिसमें तथ्य विचारों का समर्थन नहीं करते थे।

सत्योत्तर राजनीति का दर्शन ,2014 में हुए स्कॉटिश स्वतंत्रता जनमत संग्रह जिसे जेरेमी कोर्बिन द्वारा मदद की गई थी उसमें एवं लेबर लीडरशिप इलेक्शन कथा यूके द्वारा ईयू राज्य पर छोड़ने हुए किए गए प्रचार में हुआथा।

सत्योत्तर राजनीति को इराक युद्ध के नेतृत्व में पूर्व व्रत रूप से पहचाना गया था , विशेष रूप से जुलाई 2016 में प्रकाशित चिलकोट प्रतिवेदन के बाद। इस प्रतिवेदन में निष्कर्ष दिया गया था कि, पूर्व प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर ने सैन्य दृष्टि को गलत रूप से प्रस्तुत किया था कि इराकके रासायनिक हथियार विकास कार्यक्रम उन्नत कक्षा के थे।

2016 में यूके ईयू सदस्यता जनमत संग्रह के दौरान सत्योत्तर राजनीति का जम कर उपयोग किया गया था। स्काई न्यूज़ के राजनीतिक संपादक फैसल इस्लाम ने कहा था कि, माइकल गोवे ने ' Post fact politics- सत्योत्तर राजनीति-' का इस्तेमाल किया था , जिसे ट्रंप अभियान से

आयात किया गया था। एक साक्षात्कार में गोवे की टिप्पणी में कहा गया था कि , 'मुझे लगता है कि इस देश के लोगों के पास पर्याप्त विशेषज्ञ है..... को सत्योत्तर प्रवृत्ति के रूप में चुना गया था ; हालांकि यह वास्तव में एक गलतफहमी है '। अरोन बैंक ने कहा था कि , 'तथ्य काम नहीं करते हैं..... आपको भावनात्मक रूप से लोगों से जुड़ना होगा। यह ट्रंप सफलता है। यूरोपीय संघछोड़ो जनमत संग्रह के प्रमुख पुरस्कर्ताएंड्रियालिड्सोम - कंजरवेटिव नेतृत्व चुनाव में दो अंतिम उम्मीदवारों में से एक थे , जिसको सत्योत्तर राजनेता के रूप में चुना गया था, विशेष रूप से जब उन्होंने असन्तुष्ट प्रतिद्वंदी थेरेसा से इंकार कर दिया , ट्रांसक्रिप्ट सबूत के बावजूद, द टाइम्स के साथ एक साक्षात्कार में।

संयुक्त राज्य अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिका में सत्योत्तर राजनीति पदों का उपयोग विरोधाभासी स्थिति का वर्णन करने के लिए किया गया था। यहां रिपब्लिकन पार्टी , की जिसने डेमोक्रेटिक पार्टी की तुलना में कठोर पार्टी अनुशासन को लागू किया था ,फिर भी खुद को अधिक द्विपक्षीय रूप में पेशकरने हेतु सक्षम थी, अलग अलग डेमोक्रेट्स इस के विपरीत रिपब्लिकननीतियों का समर्थन करने की अधिक संभावना रखते थे। सत्योत्तर राजनीति शब्द का उपयोग द न्यूयॉर्क टाइम्स में पोल कुगमैन द्वारा मिट रोमनी की 2012 के राष्ट्रपति अभियान के विवरणों में किया था , जिसमें कुछ दावो जैसा कि बराक ओबामा ने रक्षा खर्च में कटौती की थी और माफी मांगना शुरू किया था। यह बात खारिज होने के बावजूद इसे लंबे समय तक दोहराया गया था। वास्तव में अमेरिकी रक्षा खर्च में कमी नहीं आई थी। यह बात सकल घरेलू उत्पादन के प्रतिशत के रूप में कहा गया था। यह 2010 में सकल घरेलू उत्पाद का 5.7 प्रतिशत से उच्चतम 2012 में कम हो कर 5.2 प्रतिशत हो गया और 2015 तक 4.5 प्रतिशत तक गिर जाने का अनुमान था। इसी तरह , ओबामा ने कोई माफी नहीं मांगी थी।ओबामाप्रशासन ने विदेशी मुद्दों को सुलझाने के लिए जो प्रयास किए थे और विदेशी यात्राएं की थी , उसको इतिहास के साथ जुड़ने के लिए बताया गया था।

हावर्ड गैजेट के लिए एक समीक्षा में क्रिस्टोफ़र रॉबीचौद ने - हावर्ड कैनेडी स्कूल में नैतिकता और सार्वजनिक नीति पर एक व्याख्यान - चुनाव और राजनेताओं की वैधता - में बताया था कि, यह सब साजिशों के सिद्धांत है, जैसा कि, बिरथर। इस पद में यह विचार निहित है कि , बराक ओबामा अमेरिका में प्राकृतिक रूप से पैदा नहीं हुए थे। यह सब सत्योत्तर राजनीति का दुष्प्रभाव है। रॉबीचौद ने 2014 के बुश बनाम गोरे के चुनाव अभियानों में उम्मीदवारों के व्यवहार का विश्लेषण किया था। जिसमें पाया गया था कि चुनाव के बादभी अल गोरे के समर्थक बराक ओबामा का विरोध कर रहे थे, तो अलगोरे को उन्हें परिणाम स्वीकार करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना पड़ा था। इसी तरह 'द ह्यूमनिस्ट'के लिए लिखने वाले रॉब बोस्टन ने अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में साजिशों के सिद्धांतों में वृद्धि पाई थी , जिसमें बिरथीज्म, जलवायु परिवर्तन एवं विकास का अस्वीकार का समावेश होता है। इन सभी को रॉब बोस्टन ने सत्योत्तर राजनीति के रूप में पाया गया था। उन्होंने कहा था कि , इन साजिश सिद्धांतों के खिलाफ व्यापक रूप से उपलब्ध साक्ष्य के चलते उनका विकास तेजी से हुआ है।

2016 में सत्योत्तर शब्द व्यापक रूप से उपयोग में लाया गया था। जिसमें द वॉशिंगटन पोस्ट में प्रोफेसर डैनियल डब्ल्यू ड्रेजनर; द गार्जियन में जोनाथन फ्रिलेंड ,द इंडिपेंडेंट में क्रिस सिल्ज़्ज़ा , द न्यू रिपब्लिक के जीट हीर , द लॉस एंजिलिस टाइम्स में जेम्स किरचिक , हावर्ड में सरकार और इतिहास के कई प्रोफेसर्स शामिल होते हैं। 2017 में न्यू यॉर्क टाइम्स, द वॉशिंगटन पोस्ट और अन्य ने चुनाव के बाद ट्रम्प के बयान में झूठ या झूठ बोलने की ओर इशारा किया था। पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा का कहना था कि , नए माध्यमों के पारिस्थितिक तंत्र का अर्थ है , सब कुछ सच है और कुछ भी सच नहीं है।

पर्यावरणीय राजनीति

विश्व के सभी वैज्ञानिकों के बीच सर्वसम्मति पाई जाती है कि, मानवीय गतिविधियों के कारण जलवायु परिवर्तन हुआ है। लेकिन विश्व के कई राजनीतिक दलों नेजलवायु परिवर्तन को अपनी नीतियों के आधार पर अस्वीकार किया है। उन दलो पर उद्योगदाताओं को लाभ पहुंचाने के लिए जलवायु परिवर्तनो का मुकाबला करने के लिए पर्यावरणीय उपायों में व्यवधान डालने के लिए सत्योत्तर तकनीकों का उपयोग करने का आरोप लगाया जाताहै। 2016 के चुनाव के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका नेकई पर्यावरणीय परिवर्तनों का अस्वीकार सत्ता में वृद्धि देखी जाती है ; जैसा कि पूर्व प्रमुख बराक ओबामा द्वारा नियुक्त पर्यावरण संरक्षण संस्था के प्रमुख जीना मैककार्थी को हटाकर नवनियुक्तप्रमुख ट्रंप ने स्कॉट प्रीत कीनियुक्ति कीथी| ऑस्ट्रेलिया मे टोनी अबॉर्ट की सरकार द्वारा कार्बन मूल्य निर्धारण को रद्द किया तो उसे ' द एज ' ने सत्योत्तर राजनीति का पतन कहा था।

7. सत्योत्तर राजनीति का समाधान

प्रौद्योगिकी कंपनियों एवं सरकारों ने उभय रूप से सत्योत्तरराजनीति की चुनौतियों से मुकाबला करने के लिए

कुछ प्रयत्न किए हैं। इस से संबंध प्रोफेसर नायफ़ अलरोहन ने 'ग्लोबल पॉलिसी' जर्नल में चार विशेष प्रतिक्रियाओं का सुझाव दिया है, जो निम्नवत है:

1. तथ्यों को जांचने के लिए तकनीकों में सुधार करना । जैसा कि जर्मनी ने पहले से ही एक नकली समाचार पहचानने एवं उन्हें हटाने के लिए फेसबुक को व्यवस्था करने के लिए कहा था।

2. वैज्ञानिक और वैज्ञानिक समुदाय के लिए बड़ी भागीदारी और दृश्यता। जैसा कियूनाइटेड किंगडम में संसदीय समितियों की एक श्रुखला है , जिस पर वैज्ञानिकों को गवाही देने के लिए बुलाया जाता है, और शोधनीति कों सूचित करने के लिए उनके शोध प्रस्तुत करते हैं।

3. मजबूत सरकारी कार्यवा ही। चेक गणराज्य जैसे देशों में नकली खबरों से निपटने के लिए नई इकाइया स्थापित की गई है। यहां सबसे महत्वपूर्ण चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि, इस तरह के राज्य के नेतृत्व वाले प्रयासों को जांच के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग मैं नहीं लाया जाएगा यह महत्त्वपूर्ण चुनौती है।

4. नकली खबरों को सुरक्षित करना। सुरक्षा के मामले के रूप में सत्योत्तर राजनीति का इलाज करना और इस घटना का मुकाबला करने के लिए वैश्विक प्रयासों को तैयार करना महत्वपूर्ण है। मार्च 2017 में, स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर संयुक्त राष्ट्र विशेष संवाददाता , ओएससीई ओर अमेरिकी राज्यों के संगठनने फर्जी समाचारों के प्रभावो के खिलाफ चेतावनी देने के लिए 'अभिव्यक्ति और नकली समाचार, विवाद और प्रचार की स्वतंत्रता ' पर संयुक्त घोषणा जारी की थी , लेकिन साथ ही राज्य अनिवार्य सेंसरशिप मैं किसी भी प्रयास की निंदा करते हैं।

मनोवैज्ञानिक समाधाननो में कैंब्रिज विश्वविद्यालय के संशोधनकर्ताओ द्वारा प्रस्तावित एक तथाकथित नकली समाचार टीका को शामिल किया जाता है।

References

1. Schwartz, Ian (28 November 2016). "George Will: "Post-Factual Politics" From Campaign Still Exists, Nixon More Of A Statesman Than Current Leadership". RealClearPolitics.com. Retrieved 8 November 2017.
2. Jump up to: Holmes, Jack (26 September 2016). "Trump's Campaign Manager Offered Her Most Brilliant Defense Yet of Trump's Lies". Esquire. Retrieved 8 November 2017.
3. ^Jump up to:"The post-truth world: Yes, I'd lie to you," The Economist Sept 10, 2016". Economist.com. 10 September 2016. Retrieved 26 March 2018.
4. Jump up to: John Connor (14 July 2014). "Tony Abbott's carbon tax outrage signals nadir of post-truth politics". The Age. Retrieved 11 July 2016.
5. Jump up to: Gay Alcorn (27 February 2014). "Facts are futile in an era of post-truth politics". The Age. Retrieved 11 July 2016.
6. Jump up to: Amulya Gopalakrishnan (30 June 2016). "Life in post-truth times: What we share with the Brexit campaign and Trump". The Times of India. Retrieved 11 July 2016.
7. Jump up to: Ian Dunt (29 June 2016). "Post-truth politics is driving us mad". politics.co.uk. Retrieved 11 July 2016.
8. Jump up to: "Free speech has met social media, with revolutionary results". New Scientist. 1 June 2016. Retrieved 11 July 2016.
9. Jump up to: Flood, Alison (15 November 2016). "'Post-truth' named word of the year by Oxford Dictionaries". The Guardian. Retrieved 16 November 2016.
10. Jump up to: Jonathan Freedland (13 May 2016). "Post-truth politicians such as Donald Trump and Boris Johnson are no joke". The Guardian. Retrieved 11 July 2016.
11. Jump up to: Daniel W. Drezner (16 June 2016). "Why the post-truth political era might be around for a while". The Washington Post. Retrieved 11 July 2016.
12. "The Iran-Contra Affair 30 Years Later: A Milestone in Post-Truth Politics". National Security Archive. 25 November 2016. Retrieved 24 May 2017.
13. Flood, Alison (15 November 2016). "'Post-truth' named word of the year by Oxford Dictionaries". The Guardian. Retrieved 20 November 2016.
14. Kreitner, Richard (30 November 2016). "Post-Truth and Its Consequences: What a 25-Year-Old Essay Tells Us About the Current Moment". The Nation. Retrieved 1 December2016.
15. Keyes, Ralph (2004). The Post-Truth Era: Dishonesty and Deception in Contemporary Life. New York: St. Martin's.
16. Alterman, Eric (2004). When Presidents Lie: A History of Official Deception and Its Consequences. New York: Viking. p. 305.
17. Crouch, Colin (2004). Post-democracy. Cambridge, UK: Polity. p. 4.
18. Harsin, Jayson (20 December 2018). "Post-Truth and Critical Communication". Oxford Research Encyclopedia ofCommunication. doi:10.1093/acrefore/9780190228613.013.757. ISBN 9780190228613.
19. Tom Jeffery (26 June 2016). "Britain Needs More Democracy After the EU Referendum, Not Less". The Huffington Post. Retrieved 11 July 2016.
20. Jump up to: "Post-Truth Politics". Grist. 1 April 2010. Retrieved 11 July 2016.
21. Jump up to: Christina Pazzanese (14 July 2016). "Politics in a 'post-truth' age". Harvard Gazette. Retrieved 6 August 2016.
22. Kathleen Lonsdale, Is Peace Possible? by Penguin Books, 1957, p 11
23. Jump up to: Ned Simons (8 June 2016). "Tory MP Sarah Wollaston Switches Sides in EU Referendum Campaign". The Huffington Post. Retrieved 11 July 2016.
24. Peter Preston (9 September 2012). "Broadcast news is losing its balance in the post-truth era". The Guardian. Retrieved 11 July 2016.
25. "The UK's EU membership fee". Full Fact. 27 May 2016. Retrieved 11 July 2016.
26. Anthony Reuben (25 April 2016). "Reality Check: Would Brexit mean extra £350m a week for NHS?". BBC News. Retrieved 11 July 2016.
27. Patrick Worrall (19 April 2016). "FactCheck: do we really send £350m a week to Brussels?". Channel 4 News. Archived from the original on 8 July 2016. Retrieved 11 July 2016.
28. Stone, Jon (12 September 2016). "Vote Leave's £350m for the NHS pledge was 'just an example', says group's chair". The Independent. Retrieved 16 November 2016.
29. Gove, Michael (3 June 2016). "Britain has had enough of experts, says Gove". Financial Times. Retrieved 1 August 2016.
30. Jump up to: Michael Deacon (9 July 2016). "In a world of post-truth politics, Andrea Leadsom will make the perfect PM". The Daily Telegraph. Retrieved 11 July 2016.

31. Roy Boston (22 December 2015). "Humanists and the Rise of "Post-Truth America"". The Humanist. Retrieved 11 July 2016.
32. Jump up to: Chris Cillizza (10 May 2016). "Donald Trump's post-truth campaign and what it says about the dismal state of US politics". The Independent. Retrieved 11 July 2016.
33. Harsin, Jayson. "That's Democratainment: Obama, Rumor Bombs and Primary Definers". Flow TV. Retrieved 31 August 2016.
34. Kang, Cecilia, A. D. A. M. Goldman, and WASHINGTON—Edgar M. Welch. "In Washington pizzeria attack, fake news brought real guns." The New York Times 5 (2016).
35. Frank Esser `Tabloidization' of News. A Comparative Analysis of Anglo-American and German Press Journalism European Journal of Communication Vol 14, Issue 3, 1999 September 1, 1999
36. Harsin, Jayson (24 February 2015). "Regimes of Posttruth, Postpolitics, and Attention Economies". Communication, Culture & Critique. 8 (2): 327–333. doi:10.1111/cccr.12097.
37. Richard Sambrook (January 2012). "Delivering trust: Impartiality and objectivity in the digital age" (PDF). Reuters Institute for the Study of Journalism. University of Oxford.
38.
   - Robert S. Eshelman, The danger of fair and balanced, Columbia Journalism Review(May 1, 2014).
   - Peter Preston, Broadcast news is losing its balance in the post-truth era, The Guardian (September 9, 2012).
   - Margaret Sullivan, He Said, She Said, and the Truth, New York Times (September 15, 2012): "Simply put, false balance is the journalistic practice of giving equal weight to both sides of a story, regardless of an established truth on one side."
   - Paul Krugman, The Post-Truth Campaign, New York Times (December 23, 2011): "[I]f past experience is any guide, most of the news media will feel as though their reporting must be 'balanced,' which means that every time they point out that a Republican lied they have to match it with a comparable accusation against a Democrat — even if what the Democrat said was actually true or, at worst, a minor misstatement."
   - Katrina vanden Heuvel, The distorting reality of 'false balance' in the media, Washington Post: "False equivalence in the media — giving equal weight to unsupported or even discredited claims for the sake of appearing impartial — is not unusual. But a major media organization taking meaningful steps to do something about it is."
39. Ralph Keyes (2004). The Post-Truth Era: Dishonesty and Deception in Contemporary Life. pp. 127–128. ISBN 9781429976220.
40. Gillian Tett (1 July 2016). "Why we no longer trust the experts". Financial Times. Retrieved 11 July 2016.
41. Jump up to:[a b] Rob Boston (22 December 2015). "Humanists and the Rise of "Post-Truth America"". The Humanist. Retrieved 6 August 2016.
42. Jump up to:[a b c] Katherine Viner (12 July 2016). "How technology disrupted the truth". The Guardian. Retrieved 12 July 2016.
43. Rory Carroll (1 August 2016). "Can mythbusters like Snopes.com keep up in a post-truth era?". The Guardian. Retrieved 23 October 2016.
44. "Is Digital Culture Responsible for Post-Truth Politics? - Eliane Glaser | Open Transcripts". Open Transcripts. Retrieved 3 March 2017.
45. Jump up to:[a b] Davies, William (24 August 2016). "The Age of Post-Truth Politics". The New York Times. ISSN 0362-4331. Retrieved 3 March 2017.
46. Amy Mitchell, Amy; Kiley, Jocelyn; Eva Matsa, Katerina; Gottfied, Jeffrey. "Political Polarization & Media Habits". Pew Research Center. Retrieved 31 August 2016.
47. "The myth of post-truth politics". 20 April 2017.
48. Toby Young (16 July 2016). "The truth about 'post-truth politics'". The Spectator. Retrieved 14 July 2016.
49. Jump up to:[a b] Alexios Mantzarlis (21 July 2016). "No, we're not in a 'post-fact' era". Poynter Institute. Retrieved 27 October 2016.
50. Alexios Mantzarlis (7 October 2016). "Fact check: This is not really a post-fact election". Washington Post. Retrieved 27 October 2016.
51. Helfand, David J. (2017). "Surviving the Misinformation Age". Skeptical Inquirer. 41 (3): 34–39. Retrieved 6 October 2018.
52. "GfdS wählt "postfaktisch" zum Wort des Jahres 2016". 9 December 2016.
53. Iain Gray (1 March 2012). "Beware the black art of post-truth politics". The Scotsman. Retrieved 11 July 2016.
54. Jim Murphy (23 September 2015). "We live in a volatile age of post-truth politics – and so Brexit cannot be ruled out". New Statesman. Retrieved 11 July 2016.
55. Max Richter (8 July 2016). "Millions of us knew the Iraq war would be a catastrophe. Why didn't Tony Blair?". The Guardian. Retrieved 11 July 2016. Blair's creative way with the facts seems in retrospect to be the beginning of the sort of post-truth politics we have seen in the recent Brexit debate, where fiction and reality were treated by Nigel Farage, Boris Johnson and their like as essentially interchangeable.
56. "Leader: The Iraq War and its aftermath". New Statesman. 6 July 2016. Retrieved 11 July 2016.
57. Jump up to: Mikey Smith, Rachel Bishop (3 June 2016). "Post-truth politics: Michael Gove accused of 'importing Trump campaign' to Britain with £350m a week claim". The Mirror. Retrieved 11 July 2016.
58. Matthew Flinders, Post-truth, post-political, post-democracy: the tragedy of the UK's referendum on the European Union, OUPBlog (Oxford University Press (3 July 2016).
59. Paul Krugman (23 December 2011). "The Post-Truth Campaign". The New York Times.
60. Scott, Sydney E.; Inbar, Yoel; Rozin, Paul (2016). "Evidence for Absolute Moral Opposition to Genetically Modified Food in the United States" (PDF). Perspectives on Psychological Science. 11 (3): 315–324. doi:10.1177/1745691615621275. PMID 27217243.
61. See Denialism § Genetically modified foods for extensive citations.
62. Heer, Jeet (1 December 2015), "Donald Trump Is Not a Liar; He's something worse: a bullshit artist", The New Republic, retrieved 22 July 2016
63. James Kerchick (29 June 2016). "What Trump and the Brexiteers have in common". Los Angeles Times. Retrieved 11 July 2016.
64. Leonhardt, David; Thompson, Stuart A. (23 June 2017). "Trump's Lies". New York Times. Retrieved 24 June 2017.
65. Qui, Linda (27 April 2017). "Fact-Checking President Trump Through His First 100 Days". New York Times. Retrieved 25 June 2017.
66. Kessler, Glenn; Lee, Michelle Ye Hee (1 May 2017). "Fact Checker Analysis - President Trump's first 100 days: The fact check tally". Washington Post. Retrieved 25 June 2017.
67. Drinkard, Jim; Woodward, Calvin (24 June 2017). "Fact check: Trump's missions unaccomplished despite his claims". Chicago Tribune. Retrieved 25 June 2017.
68. Remnick, David (28 November 2016). "Obama Reckons With A Trump Presidency". The New Yorker. Retrieved 24 January 2017.
69. Connor, John (November 2011). "Climate change and post-truth politics". Waste Management and Environment. 22 (10).
70. Nayef Al-Rodhan, "Post-Truth Politics, the Fifth Estate and the Securitization of Fake News, Global Policy Journal, 7th June 2017
71. "Policy-making and parliament in an era of 'post-truth'". Medium.com. 28 February 2017. Retrieved 26 March 2018.
72. "Canada's top scientist confident her role already having an impact". The Toronto Star. 2 December 2018. Retrieved 19 December 2018.
73. Robert Tait in Prague. "Czech Republic to fight 'fake news' with specialist unit | Media". The Guardian. Retrieved 26 March 2018.

74. "Amid rise of 'fake news,' authorities should ensure truthful info reaches public – UN, regional experts | UN News". Un.org. 10 March 2017. Retrieved 26 March 2018.

75. Kutner, Max. "Edward Snowden: Fight 'Fake News' With Truth, Not Censorship". Newsweek.com. Retrieved 26 March 2018.

76. https://www.spectator.co.uk/2017/06/post-truth-its-pure-nonsense/

RRIJM 2015, All Rights Reserved